भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार ...

Model Answer Key

Date : 14/07/2019

A. ब्रह्म समाज के उद्देश्य लिखो।

1. ब्रह्म समाज की संस्थापक राजा राममोहन राय को माना जाता है।
2. इसका प्रमुख उद्देश्य वेदों को प्रसारित करना।
3. सामाजिक कुप्रथाएं जैसे सती प्रथा, जातिवाद, बाल विवाह का विरोध।

A- Write the aims of Brahma Samaj.

It forbade idol-worship and discarded meaningless rites and rituals.

Established in 1828 by Raja Ram Mohan Roy.

B. श्री अरविन्दो के द्वारा दार्शनिक सिद्धांत–

1. अरविन्दो एक महान दार्शनिक और राजनैतिक विचारक थे। आपके दर्शन में जीव आत्मा, अतिमानस तथा अधिमानस संबंधी सिद्धांत प्रमुख हैं।

B- Write philosophical theories established by Sri Aurobindo.

Philosophical theories established by Sri Aurobindo are Integral Yoga.

Theory of evolution and involution , processes by which human beings can evolve into a superior state of being.

C. लोक सेवक हेतु नैतिक संहिता क्यों आवश्यक

– लोक सेवक हेतु नैतिक संहिता निम्न. कारणों से आवश्यक हैं–

1. बढ़ते भ्रष्टाचार के उन्मूलन हेतु।
2. भेदभाव की समस्या के निवारण हेतु।
3. सुशासन की स्थापना हेतु।

C- Why is moral code necessary for public servants?

1. Public servants come in direct contact with the public during their work, so their moral level should be high for being ideal for the general public.
2. Ethics provide accountability between the public and the administration. Adhering to a code of ethics ensures that the public receives what it needs in a fair manner.
3. With a strong code of ethics in public administration, leaders have the guidelines they need to carry out their tasks and inspire their employees and committees to enforce laws in a professional and equitable manner.

D. विश्वास –

– किसी वस्तु व्यक्ति के प्रति क्षणिक कल्पनाओं पर आधारित तर्कहीन विचारधारा होती है।

– यह मनोवृत्ति के संज्ञानात्मक तत्व से प्रेरित होती है।

– विश्वास का क्षेत्र मनोवृत्ति से छोटा होता है।

D- What is belief.

Belief is a feeling that somebody/something is true, morally good or right, or that somebody/something really exists.

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

E. नववेदांती–

– नववेदांती के नाम से सर्वपल्ली राधाकृष्णन को जाना जाता हैं।

– इन्होंने नववेदांत में पूर्व तथा पश्चिम दर्शन का समन्वय करने का प्रयास किया।

– नववेदांत का उल्लेख 'ईर्स्टन एण्ड वेर्स्टन थॉट' में किया।

E- Who are the Neo Vedanti?

Neo-Vedanta is a modern interpretation of Vedanta, with a liberal attitude toward the Vedas. It reconciles dualism and non-dualism, and rejects the "universal illusionism" of Shankara, despite its reference for classical Advaita Vedanta.

F. सप्तांग सिद्धांत के प्रतिपादक –

– सप्तांग सिद्धांत के प्रतिपादक कौटिल्य को माना जाता है।

– कौटिल्य भारतीय दर्शन के प्रमुख एवं प्रभावशाली राजनैतिक चिंतक थे।

– सप्तांग सिद्धांत का उल्लेख इन्होंने अर्थशास्त्र में किया था।

F- Saptanga Siddhant is proposed by.

Saptanga theory of state was given by Kautilya in Arthashastra. The seven limbs are King, Amatya (Bureaucrats) , Janapada (territory), Durga (Fort), Kosa (Treasure), Danda (coercive authority) and Mitra (ally).

G. अच्छे आचरण की विशेषताएं–

1. आचरण सदैव सत्य के अनुसार होना चाहिए।
2. आचरण अनुशासित होना चाहिए।
3. आचरण न्यायप्रिय एवं परिस्थितिनुकुल होना चाहिए।

G- Features of good conduct.

Following are the features of good conduct

1. Integrity
2. Honesty
3.Accountability

H. नैतिक दुविधा–

– जब लोक सेवक के समक्ष एक से अधिक नैतिक तर्क उपस्थित होते हैं। तो किस नैतिक तर्क को चुने व किसके अनुसार कार्य करें इस दुविधा को ही नैतिक दुविधा कहते है।

– ऐसे में लोक सेवकों से आशा की जाती है कि उचित तर्क का चयन करें।

H- Explain the moral dilemma.

A moral dilemma is a conflict in which you have to choose between two or more actions and have moral reasons for choosing each action.

Or we can say that it is a situation in which a difficult choice has to be made between two courses of action, either of which entails transgressing a moral principle.

I. सिक्ख धर्म के संस्थापक–

- सिक्ख धर्म के संस्थापक गुरू नानक को माना जाता है।

– आपने सिक्ख धर्म में तीर्थ, तपस्या तथा संयास को निषेध माना था।

– आपने बहुदेव का विरोध किया।

I- Who was the founder of Sikhism?

Guru Nanak Dev was the founder of Sikhism.

10. गांधी जी के तीन पाप– सन् 1925 में प्रकाशित गांधी जी के 7 पापों में से 3 पाप निम्न. है–

1. बिना सिद्धांत के राजनीति।
2. बिना काम के धन।
3. बिना अन्तःकरण के आराम

J- Write three sins from the seven sins of Gandhiji.

1.Knowledge without character.

2.Commerce without morality.

3.Science without humanity.

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

K.. दयानंद सरस्वती के प्रसिद्ध ग्रंथ–

- इनके प्रसिद्ध ग्रंथ का नाम 'सत्यार्थ प्रकाश' हैं।
- सत्यार्थ प्रकाश की रचना सभी धर्मो के तुलनात्मक अध्ययन के उपरांत धार्मिक रूढ़ियों के विरूद्ध की गई हैं।
- यह वेदांत दर्शन पर लिखा गया है।

L.. लोक सेवकों का समर्पित होना–

- समर्पण लक्ष्यों के प्रति प्रतिबद्धता की ऊँची मनोस्थिति होती है। जिससे कि कार्यो में तीव्रता आती है।
- प्रशासन अधिक जनोन्मुखी एवं समाजोन्मुखी बनता है।
- भेदभाव और लालफिताशाही पर स्वतः ही अंकुश लग जाता है।

M.. कबीर के दर्शन का मूल–

- कबीर के दर्शन का मूल 'माया' है।
- कबीर एक श्रेष्ठ समाजसुधारक माने जाते है।
- कबीर ने माया को सबसे प्रभावशाली बंधंन माना है।

N.. रूढ़िवादिता–

- जब मनुष्य अपनी रीति धर्म तथा परम्पराओं के प्रति सकारात्मक मनोवृत्ति बना लेता है। तो उसे रूढ़िवादिता कहते है।
- रूढ़िवादिता तर्कहीन होती है।
- यह वर्तमान में अप्रसांगिक हैं।

O.. रूचि–

- किसी वस्तु व्यक्ति के प्रति विशेष लगाव या आकर्षण को ही रूचि कहा जाता है।
- **मैक्डूगल के अनुसार**– रूचि दिया दिया हुआ अवधान है। अवधान रूचि का क्रियात्मक रूप हैं।

K- Name of the famous book of Dayanand Saraswati.

Satyarth Prakash is most famous one .

Other books are Rig Veda Bhashya Bhumika, GokarunaNidhi.

L- Public servant should be devoted. Why?

Dedication is vital personality trait of an individual. In organizational framework, faithful employees work towards achieving the organizational goals. Dedication will carry person through a lack of motivation. It is his ability to continue acting when motivation is lacking. Dedication will drive to certain task rapidly.

M- The essence of the philosophy of Kabir is ?

Kabir laid stress on 'Bhakti'.He said that through Bhakti or devotion one would come nearer to God; one could be released from the cycle of birth and death only by sincere love and devotion to God, which he called Bhakti.

To Kabir Allah and Rama were but different names of the same supreme being. To him Hindus and Muslims were "pots of the same clay".

N- What is conservatism ?

Conservatism is a political and social philosophy promoting traditional social institutions in the context of culture and civilization.

Conservatism is opposition to rapid changes, and promotes keeping traditions in society.

O- What is interest ?

Interest or hobbies are activities that can be done for leisure time. These include sports, entertainment, art, music, study of a subject or collection of related things, etc. These activities are not done commercially or in the interest of earning money, but only on the basis of personal interest it is spent time. Interest is the motivating force that inspires us to pay attention to a person, object or action.

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone
KAUTILYA ACADEMY INDORE

(6 Markers)

A. अभिक्षमता किसे कहते हैं प्रशासन में इसकी उपयोगिताः– किसी व्यक्ति की ऐसी विशिष्ट योग्यता का समायोजन जिसके आधार पर उचित प्रशिक्षक व अनुकूल वातावरण मिलने पर उसके सफल होने की भविष्यवाणी की जा सकें।

जैसे– कौटिल्य ने चन्द्रगुप्त मौर्य की क्षमता को देखकर उसके राजा होने की भविष्यवाणी की थी। जिस कार्य के प्रति व्यक्ति की रूचि हो तथा उसको करने की अभिक्षमता पहले से विकसित हो तो उसे वह पूर्ण समाप्ति के साथ करता है। इसकी प्रशासन में उपयोगिता निम्न हैं–

1. इससे प्रशासन में लालफीताशाही व भ्रष्टाचार को कम किया जा सकता है।
2. इससे जनता प्रशासन के प्रति जनोन्मुखी होगी।
3. इससे प्रशासन में पारदर्शिता को बढ़ावा मिलेगा।
4. इसके माध्यम से लोकसेवक अपने कार्यो के प्रति पूर्ण समर्पित व ईमानदार रहेगें।
5. प्रशासनिक कार्य क्षमता में वृद्धि
6. कुशलता में वृद्धि
7. आतंकवाद व नक्सलवाद के नियंत्रण हेतु
8. सुशासन की स्थापना हेतु
9. वंचित वर्गो की सहायता हेतु
10. योजनाओं के उचित क्रियान्वयन हेतु।

अतः अभिक्षमता व रूचि दोनों साथ–साथ चलते है। जिस क्षेत्र में व्यक्ति की रूचि हो उसकी अभिक्षमता वहां सर्वाधिक होती है। इससे व्यक्ति के विकास के साथ–साथ तकनीकी व सामाजिक विकास को बढ़ावा मिलता है।

A- What is Aptitude ? What is its usefulness in the administration ?

An aptitude is a constituent of a capability to perform certain tasks at a certain level, which can also be considered "talent".

Aptitude is the ability or potential at problem solving, both physical and mental, that can be acquired by practice and skills.

Aptitude can be from nature and can also be nurtured. The aptitude can be mental and physical unlike attitude that is only mental.

Aptitude is considered as natural capability for doing a particular work or solving a particular problem or facing a particular problem or facing a particular situation.

A civil servant, needed aptitude for

1- Effectiveness of public service delivery: Eg- Coal ferry trucks often complain of carry loss, which was checked by the use of GPS and the attitudinal application by the concerned authority.

2- Engaging with Public, Peer, and Superior: eg- District collector performs multiple job roles as per the nature of work from crisis management to magistrate role.

3- Enabling and creative working scope : eg- Able to develop the required system of PDS (like Biometrically Authenticated Physical Uptake) in case of Aadhar not functional.

B. राजा राम मोहन रॉय समाज सुधार आंदोलन के प्रणेता है।

भारतीय सामाजिक व धार्मिक पुनर्जागरण के क्षेत्र में आपका विशिष्ट स्थान है। ब्रह्मसमाज के संस्थापक प्रेस की स्वतंत्रता के पक्षधर सामाजिक सुधार आन्दोलन प्रेणता तथा बंगाल में नवजागरण युग के पितामह थे। आपके विचारों को निम्न भागों में बांटकर पढ़ सकते है।

B- Raja Ram Mohan Roy is the leader of the society reform movement.

Popularly known as the "Maker of Modern India" and "Father of Modern India", Raja Ram Mohan Roy, a social and educational reformer, was an idealist who contributed immensely in eradicating social evils prevalent in the society during the 18th century. He made every possible effort to make his

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone
KAUTILYA ACADEMY INDORE

– जाति प्रथा का विरोध

– मूर्ति पूजा का विरोध

– सती प्रथा का अंत

आर्यो ने कर्म के आधार परसमाज को वर्णो वर्गो में विभाजित किया था, जो सामाजिक कार्यप्रणाली की एक इकाई थी, लेकिन कालांतर में जन्म से ही जाति का निध ार्ारण होने लगा और इस निर्धारण का समाज के लिए बड़ा विनाशकारी परिणाम प्राप्त हुआ। कुछ लोग श्रेष्ठ बन बैठे तथा अन्य वर्गो में से कुछ निकृष्ठ समझे जाने लगे। राजा राममोहन रया को इसके हानिकारक प्रभाव दिखाई दे रहे थे। इसलिए उन्होंने जातीय भेदभाव एवं ऊँच नीच की भावना का डंटकर विरोध किया आपका मानना था कि जातीय आधार पर किसी को श्रेष्ठ अथवा निकृष्ठ मानना पूर्णतः अनुचित और अन्यायपूर्ण है।

राजा राममोहन राय के अनुसार मूर्ति–पूजा का मुख्य कारण यह है कि भक्तों को इससे कोई वास्तविक लाभ नहीं मिलता बल्कि केवल अंधी श्रद्धा समर्पित करना होता है। राजा राममोहन राय वेदों उपनिषदों के आधार पर मूर्तिपूजा को अनुचित ठहराते है और कहते है कि वह भक्ति में अंधा होकर मूर्तिपूजा करता है और अपने कर्तव्य से विमुख हो जाता है। इसलिए परमपिता ब्रह्म जो यत्र–तत्र सर्वत्र व्याप्त है उसके प्रति श्रद्धा रखनी चाहिए।

राजाराम मोहन राय ने समाज में व्याप्त सतीप्रथा, बाल विवाह तथा बहुविवाह जैसी कुरीतियों का घोर विरोध किया और विलियम बैंटिक की सहायता से 1829 में सती प्रथा को अवैध घोषित कराया।

उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि आप आधुनिक भारत के महान चिंतक व समाज सुधारक थे।

C. प्रत्ययो का सिद्धांत ।

प्लेटों का प्रत्यय का सिद्धांत तत्व मीमांसा से संबंधित है। वास्तविक ज्ञान के स्वरूप को समझने के लिए प्लेटो ने इस सिद्धांत का प्रतिपादन किया जिसे प्रत्ययों का सिद्धांत कहा जाता है। सुकरात इस प्रकार के प्रश्न पूछा करते थे कि न्याय क्या हैं? साहस क्या हैं? सौंदर्य क्या हैं?

इन प्रश्नों के संतोषप्रद उत्तर उस समय के किसी भी दार्शनिक ने नहीं दिए। अतः प्लेटों ने इनके उत्तर

motherland a better place for the future generations to come.

His contribution to the indian society can be discussed under the following broad headings:-

(A) Uplifting Women Status: among his various reforms, Ram Mohan Roy is well known for abolishing the most brutal and humiliating practice of sati. He also opposed the Pardah system and child marriage. This improved the condition of women in such an Orthodox Paternal society.

(B) Social reforms:- he was a learned man and opposed all the irrational customs that prevailed in the society. Caste restriction was one such where he displayed his critIcism.

(C) Religious reforms: He was strictly against the practice of idolatry and polytheism(worship of multiple gods and goddesses), and the unnecessary ceremonial expenses.

(D) Educational reforms: Roy himself was a well learned man so understood the benefits of education in one's life. He established Hindu College in 1817, Anglo-Vedic School in 1822 and Vedanta college in 1826.

(E) Reforms in press: He also opposed the restrictions put On press by the government and urged for a freedom of the press.

These were the above reforms that were brought about by Raja Ram Mohan Roy in bengal and thus called popularly as Bengal Renaissance. But it was a reform for the whole country as it gradually spread.

C- Write about Concept of Idealism/ Theory of Ideas.

Idealism is a variation of the word "idealism" of English, which originates from Plato's ideological theory. According to this principle, the last power is thoughts or thought.

As a philosophical doctrine, idealism accepts the importance of thoughts, values and ideals rather than the object, and realizes the purpose of life to develop the human and its personality and spiritual

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone
INDORE

खोजने का प्रयास किया और प्लेटों ने कहा कि वास्तविक आनंद वस्तु एवं क्रियाओं से भिन्न एवं स्वतंत्र है, जिसे प्रत्यय कहते है– उदाहरण के लिये– सुन्दर वस्तुओं का प्रत्यय सौंदर्य है। वीर पुरूष का प्रत्यय साहस है, नैतिक मानवीय आचरण का प्रत्यय न्याय है। अतः कहा जा सकता है कि भौतिक जगत से भिन्न एक जगत है जो मानव को वास्तविक सुख की अनुभूति कराता है और प्लेटो ने प्रत्यय के जगत को ही वास्तविक जगत माना है और भौतिक जगत को अवास्तविक जगत माना है। अतः कहा जा सकता है कि सद्‌गुण तथा शुभ ही प्रत्यय है।

values rather than the prakriti, to which the knowledge of unity (dharmas) is different.

In essence, idealism gives important space to humans and its thoughts, feelings and ideals. By achieving these ideals and values, human beings can develop their own personality and acquire real knowledge of their soul and can interact with God. Therefore, according to idealism, the real power is spiritual, not physical.According to this philosophy, then the order of creation in the period of time runs due to the manifestation of the daily and spiritual union. Thus, the field of idealism is the eternal, infinitely eternal and eternal power of the world, and not a neutral and opposing world. In the words of being - "idealistic education philosophy gives a person the form in which he considers himself the annihilation of mental world. "

Some Eastern philosophers have been involved in the interpretation of idealistic philosophy, from Socrates, Plato, Dakat, Spoja, Berkeley, Kant, Fitash, Shellig, Hingal, Green, Shaphan Havar and Gentile etc. Apart from Maharshi of Vedas and Upanishads, from Maharishi to Arvind Ghosh.

D. अरस्तु के मध्यम मार्ग का सिद्धांत लिखो ।

नैतिक सद्‌गुणों के स्वरूप में और उनके अनुसार आचरण के सिद्धांत में अरस्तू ने एक विशेष सिद्धांत प्रतिपादित किया, जिसे मध्यम मार्ग का सिद्धांत कहा जाता हैं, जो मनुष्य के लिए संतुलित जीवन के मार्ग की और संकेत करता है। इसके अनुसार प्रत्येक नैतिक सद्‌गुण दो अतिवादी दृष्टिकोण बीच की अवस्था है। उदाहरण के लिए संयम अत्यधिक भोग विलास और पूर्णतः आनंदरहित सन्यासवाद की मध्यवर्ती अवस्था हैं, इसलिए संयम एक नैतिक गुण है। इसी प्रकार साहस भी उदण्डता एवं कायरता के बीच की अवस्था है। इसी सिद्धांत के अनुसार अरस्तू ने न्याय की व्याख्या की है और कहा है कि, न्याय अपने अधिकार की अपेक्षा बहुत अधि ाक प्राप्त करने तथा अपने अधिकार को पूर्णतः छोड़ देने की अवस्था है। इसी प्रकार उदारता बिना–सोचे समझे सब लुटा देने तथा कभी किसी को कुछ न देने की मध्यवर्ती अवस्था है वहीं नम्रता के संबंध में कहा जा सकता है कि वह अत्यधिक चापलूसी तथा अत्यधिक दुर्व्यवहार के बीच की अवस्था हैं। अतः अरस्तू के अनुसार नैतिक सद्‌गुणों का जीवन में यही महत्व है कि वह दो अतिवादी दृष्टिकोणो के मध्य की स्थिति को प्रदर्शित करते है। इसी को मध्यम मार्ग कहा जाता है।

D- Write the principle of the middle path/ golden mean of Aristotle.

The concept of Aristotle's theory of golden mean is represented in his work called Nicomachean Ethics, in which Aristotle explains the origin, nature and development of virtues which are essential for achieving the ultimate goal, happiness, which must be desired for itself. It must not be confused with carnal or material pleasures, although there are many people who consider this to be real happiness, since they are the most basic form of pleasures. It is a way of life that enables us to live in accordance with our nature, to improve our character, to better deal with the inevitable hardships of life and to strive for the good of the whole, not just of the individual.

The golden mean represents a balance between extremes, i.e. vices.

For example, courage is the middle between one extreme of deficiency (cowardness) and the other extreme of excess (recklessness). A coward would be a warrior who flees from the battlefield and a reckless warrior would charge at fifty enemy soldiers.

The importance of the golden mean is that it re-affirms the balance needed in life.

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

Moral behavior is the mean between two extremes- at one end is excess, at the other deficiency. Find a moderate position between those two extremes, and you will be acting morally.

The balance, the golden mean of which Aristotle talked about must be recognized as beneficial and important, as it is in nature itself.

E - पूर्वाग्रह किसे कहते हैं। इससे अल्पतम करने के उपाय बताएं

पूर्वाग्रह का अर्थ पूर्व में ही निश्चित कर लेना होता है अर्थात् किसी वर्ग, जाति, धर्म तथा समुदाय के प्रति उनके लक्षण व विशेषताओं के आधार पर पहले से ही विशेष प्रकार की मनोवृत्ति विकसित कर लेना पूर्वाग्रह कहलाता है।

पूर्वाग्रह व्यवहार में हमेशा नकारात्मक होता है जो कि भेदभाव को जन्म देता है।

1. **शिक्षा का प्रसार–प्रसार करके**:– शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार करके पूर्वाग्रह तथा विभेद को कम किया जा सकता है, क्योंकि शिक्षित व्यक्ति ही तर्को को आधार बनाकर अपनी मनोवृत्ति का निर्माण करता है, न कि पूर्वानुमान या कथित बातों के आधार पर।
2. **सूचना तंत्र को विकसित करके**:– किसी भी मनुष्य में किसी जाति, धर्म, समुदाय के प्रति मनोवृत्ति का निर्माण सूचना के आधार पर ही होता है। इसलिए सूचना को जन–जन तक पहुंचाकर विकसित किया जा सकता है।
3. **व्यक्तिगत पहचान को महत्व**:– समाज में किसी जाति, किसी धर्म या समुदाय की मान्यताओं को महत्व न देकर उसके स्थान पर व्यक्तिगत पहचान को महत्व दिया जाना चाहिए, क्योंकि एक ही जाति के व्यक्तियों में अलग–अलग दृष्टिकोण विकसित होता है।

अतः किसी एक व्यक्ति को मनोवृत्ति के आधाार पर पूरे समुदाय की मनोवृत्ति का आकलन करना या पूर्वानुमान लगाना सर्वदा अनुचित है।

अतः उपरोक्त व्याख्या के आधार पर पूर्वाग्रह व विभेद को कम किया जा सकता है इसके अलावा समाजीकरण के माध्यम से जागरूकता अभियान के माध्यम से धार्मिक

E- What is the Prejudice. Describe the ways to reduce Prejudice.

Prejudice is an unjustified or incorrect attitude (usually negative) towards an individual based solely on the individual's membership of a social group. For example, a person may hold prejudiced views towards a certain race or gender.

Prejudice literally means "prejudgement". It may be positive or negative. Prejudice is favoring or disfavoring something or someone for reasons that may or may not be justified.

Prejudices are examples of attitudes towards a particular group. They are usually

negative, and in many cases, may be based on stereotypes (the cognitive component)

about the specific group. History contains numerous examples of discrimination based on race and social class or caste. The genocide committed by the Nazis in Germany against Jewish people is an extreme

example of how prejudice can lead to hatred, discrimination and mass killing of innocent people.

Strategies for reducing prejudice:

Knowing about the causes or sources would be the first step in handling prejudice.

Thus, the strategies for handling prejudice would be effective if they aim at:

(a) Minimizing opportunities for learning prejudices,

(b) Changing such attitudes,

(c) De-emphasizing a narrow social identity based on the in-group, and

(d) Discouraging the tendency towards self-fulfilling prophecy among the victims of prejudice.

prejudice.

These goals can be accomplished through:

- Education and information dissemination for correcting in stereotypes related to specific target groups, and tackling the problem of a strong in group bias.

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

क्रिया–कलापों के माध्यम से भी पूर्वाग्रह व विभेद को कम किया जा सकता है, साथ ही सरकार के द्वारा इसे कम करने के लिए विभिन्न उपाय किए जा रहे है।

जैसे– विधि के समान समता का अधिकार देकर।

– भेदभाव का निषेध करके।

– अस्पृश्यता का उल्लंघन करके।

– अनुसूचित जनजाति अधिनियम के माध्यम से इत्यादि।

F- मूल्य समय के साथ साथ परिवर्तित होते हैं। स्पष्ट करें ?

– मूल्य से आशय उन नियमों से हैं, जिनके माध्यम से मनुष्य अपने लक्ष्यों की प्राप्ति करता है तथा जो मनुष्य के आचरण को नियंत्रित करता है।

समय व परिस्थिति के अनुसार मूल्य समय–समय पर परिवर्तित होते रहते है जो हमारे समाज में देखने को मिलता है।

प्राचीनकाल में हमारा समाज कर्म प्रधान था जिसका जैसा कर्म उसका वैसा धर्म तथा समाज में नारी की स्थिति बहुत सुदृढ़ थी।

तो वहीं गुप्तकाल विभिन्न आक्रमणों तथा विभिन्न जाति समुदाय के लोगों के आ जाने से हमारे समाज में सती प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा आदि प्रचलन में था, तो वहीं समाज विभिन्न जाति समूहों में बंट गया तथा देवदासी प्रथा भी देखने को मिलती है।

तो वहीं आधुनिक काल में समाज जाति के साथ–साथ विभिन्न धर्मों में बंट गया, लेकिन बाल विवाह, पर्दाप्रथा व देवदासी सती प्रथा, आदि को निषेध कर दिया गया।

अतः उपरोक्त विवरणों से स्पष्ट होता है कि मूल्य समय व परिस्थिति के अनुरूप बदलते रहते है जिस प्रकार से प्राचीनकाल से लेकर आधुनिक काल तक व्यक्तियों के विचारों में परिवर्तन हुए हैं।

लेकिन कुछ मूल्य ऐसे होते है जो परिवर्तित नहीं होते है तथा इनके परिवर्तित होने से समाज में अशांति का वातावरण फैल सकता है। जैसे नैतिक मूल्य अनुशासन।

- Increasing intergroup contact allows for direct communication, removal of mistrust between the groups.
- Highlighting individual identity rather than group identity.

F- Values change over time. Explain?

Values are the qualities and ideas that help guide our behaviour and define who we are. Our values come from our beliefs, and are formed by various means. Some examples of values are- achievement, bravery, carefulness, challenge, compassion, generosity, honesty, humor, kindness, knowledge, open-mindedness, perseverance, respect, self-control, etc.

Yes they change –

1. People's values tend to change over time as well. Values that suited you as a child change as you become a young adult, which may further change as you become an old person.
2. Over a period of time, new ethical issues have arisen and values have changed.
3. There are a series of core values around which most people would agree. However even those are changing at least in the intensity. For e.g. say if we believe that human life is sacred, but we do not feel the same intensity of this value when judging a terrorist who has killed thousands of innocent people.

No they do not –

1. Values are universal but the motivation they provide to us is of differing degree. That doesn't mean that values change.
2. We can find values like peace, kindness, hard work, perseverance, etc. still relevant to the same degree as from age old times. They will still remain relevant even after we die.
3. Good values are not supposed to change. They are eternal.

The conclusion is that values can and do change, though certain core values may be unaltered over a long period of time. These core values can be called as primarily values and the changing ones secondary values. The changes which occur in secondary values are due to changes in knowledge, changes in social and cultural values and norms, and changes arising through an individual's personal experience of life.

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

G- नीति शास्त्र व नैतिकता में अंतर।

– नीति शास्त्र विज्ञान की वह शाखा है, जिसका अध्ययन बिन्दु मानव है। अर्थात् वह शास्त्र जिसमें मानव के व्यवहार तथा आचरण का अध्ययन किया जाता हो,नीति शास्त्र कहलाता है।

नैतिकता का सामान्यत अर्थ मनुष्य के शुभ तथा अच्छे आचरण से होता हैं अर्थात् जब मनुष्य नैतिक मूल्यों के आधार पर सही गलत, शुभ अशुभ तथा अच्छे बुरे का आंकलन करके व्यवहार करता हैं, तो उसे नैतिकता कही जाती हैं।

– नीति शास्त्र काल व परिस्थिति का अध्ययन नहीं करती, अर्थात् यह प्रत्येक परिस्थिति व काल में शाश्वत रहती है। वहीं नैतिकता मानव का व्यवहारिक पक्ष हैं। इसलिये इसमें काल तथा परिस्थिति का अध्ययन किया जाता है।

– नीति शास्त्र उन मापदण्डो को प्रस्तुत करती है, जिसके आधार पर हम कार्यो को सही गलत ठहराते है। जबकि नैतिकता नीति शास्त्र के शुभ तथा अच्छे कार्यो को प्रदर्शित करती है।

– नीति शास्त्र सभी प्राणीयों के लिए एक समान होती है। लेकिन नैतिकता प्रत्येक प्राणी की अलग–अलग हो सकती है।

– नीति शास्त्र स्थायी होती है, जबकि नैतिकता अस्थायी होती है।

अतः कहा जा सकता हैं कि, नीति शास्त्र तथा नैतिकता दोनों ही मानवीय व्यवहार और आचरण को सभ्य बनाते है।

H.. लोकसेवक सरकार तथा जनता के मध्य सेतू का कार्य करता हैं–

– लोकसेवक से आशय सरकार द्वारा वेतन प्राप्त करने वाले सभी व्यक्तियों से है।

एक नैतिक लोकसेवक का यह कर्तव्य होता है कि वह एक कुशल समाज स्थापित करने के लिए सरकार द्वारा जनता के हितों के लिए बनाई गई नीतियों का लाभ समाज के प्रत्येक वर्गो तक पहुंचाएं। तथा जनता की शिकायतों व मांगो को स्पष्ट तौर पर सरकार तक पहुंचाएं अर्थात् जो सरकार व जनता के मध

G- Difference between Ethics and Morality.

Ethics and Values is that while ethics is a branch of philosophy that used to study ideal human behavior and ideal ways of being; Values are the embodiment of what an individual stands for.

The key difference between Ethics and Values are-

1. Ethics focuses on the decision-making process for determining right and wrong, which sometimes is a matter of weighing the pros and cons or the competing values and interests. Morality is a code of behavior usually based on religious tenets, which often inform our ethical decisions.
2. Morals come from within. One's own internal compass. Ethics are more extrinsic rule sets to guide us all.
3. Ethics deals with codes of conduct set my policies in the workplace and morality is the standards that we individually set for ourselves in regards to right and wrong.
4. Ethics is a set of principles developed purposefully over time. Morality is something one feels intuitively.
5. Ethics is a map of how one makes choices. Morality is an established code that can be used to judge behavior.
6. Ethics contains standards of what should be. What we "ought" to do. Morality is more of what we do – how we actually behave – focused on what "is" etc.

Conclusively, Ethics is a universal one, morality differs depends on the person. Morality cultivate in line with the Ethics on the basis of exposure of a person to Society, Family Ethical values.

H- Public Service is a link between the society and the government. Explain.

Democracy is a form of government made by the people or their elected representatives while

Bureaucracy is a form of government made up of officials and administrators working for the government. In other words,Bureaucracy is Public service. Public service is a service which is provided by government to people living within its jurisdiction, either directly (through the public sector) or by financing provision of services. Government's work is policy making (with the help of Public servants as

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

य एक समन्वय स्थापित करें तथा जनता को सरकार व प्रशासन के प्रति जनोन्मुखी बनाए रखे तो वहीं सरकार द्वारा निकाली गई प्रत्येक येाजना को जनता तक पहुचाएं। लोक सेवक के निम्न कार्यो से यह स्पष्ट किया जा सकता है कि वह एक कड़ी के रूप में कार्य करता है। जैसे–

1. नियोजन संबंधी कार्य।
2. अर्द्धन्यायिक कार्य।
3. नीतियों का क्रियान्वयन।
4. वंचित वर्गो की सहायता।
5. सभी योजनाओं का भेदभाव रहित वितरण।

अतः हम कह सकते है कि लोकसेवक एक समाज रूपी चैन की वह कड़ी है जिससे एक सभ्य समाज की स्थापना की जा सकती है।

अर्थात् लोक सेवक सरकार तथा जनता/समाज के बीच सेतू का कार्य करता है।

they have knowledge of various subjects) but it takes another machinery to land it. To do so, Government has public servants all over the country in every field. We have public servants at federal level, zonal level, state level, Division level, District level, Tehsil level, block level & from municipality to gram Panchayat level. People interact with them at every level & they solve issues being permanent office holder & hold the key to the solutions.

Their work is to look into the problems & solve it. They are responsible for grief and grievance, handling the public issues & solving them. When the problem is major or serious, public servants take it to their Political Masters & provide them every information needed. Then the decision taken is given in hands of public servants to implement. & In this way they serve both the Government & the public. Sometimes even where public services are neither publicly provided nor publicly financed, for social and political reasons they are usually subject to regulation going beyond that applying to most economic sectors.

Importance can be seen from the fact that Government would get paralysed as soon as bureaucrats stop working because it is a link between Government & public, a link which is crucial in implementing policy.

From the above points one can say - They are the eyes and the ears of Government. They are the hands of Government & in fact they are the courts of Government.

I- आदर्श प्रशासनिक अपेक्षाएं लोक सेवक को समर्पित बनाती हैं ।

समर्पण एक व्यक्ति का गुण है, जिससे व्यक्ति अहंकार की भावना से परे दूसरों के दुख के प्रति स्वयं की भावना पैदा करता है। अर्थात् दूसरों के प्रति सहानुभूति का भाव समर्पण पैदा करता है। समर्पण कार्य के सफल संचालन में निष्ठा को जन्म देता है। एक समर्पित दिमाग ऑपरेशन में तटस्थ भाव से अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में विश्वास रखता है।

सिविल सेवाओं में शामिल होने के बाद एक सिविल सेवकों को बड़े स्तर पर लोक कल्याण के लिए काम करना पड़ता है। चूंकि सेवा बलिदान और प्रेम का दूसरा नाम है, और नागरिक शब्द नागरिक शब्द को इंगित करता है। इसलिये

सिविल सेवक का उद्देश्य नागरिकों के लाभ के लिए भारतीय संविधान द्वारा स्थापित मूल्यों को प्राप्त करना है। एक सिविल

I- Ideal administrative requirements make a dedicated public servant.

Dedication is the quality of a person, so that the person creates a sense of self towards the suffering of others beyond the sense of ego. That is, the sense of sympathy towards others produces dedication. Dedication gives rise to loyalty in the successful operation of a work. A dedicated mind believes in achieving its goal in a neutral sense in the operation.

After joining civil services a civil servants have to work for public welfare on large level. Since service is another name for sacrifice and love, and the civil word indicates the word civic. Therefore

The objective of the civil servant is to get the values established by the Indian Constitution for the benefit of the citizens. In a civil servant

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

सेवक में

सिविल सेवा के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए त्याग की भावना होनी चाहिए। जब एक सिविल सेवक में बलिदान की भावना पैदा होती है, तो सजा और पुरस्कार का डर खत्म हो जाएगा। इसलिए, एक सिविल सेवक के सिविल सेवा संदर्भ को पेशेवर रूप से नहीं लिया जाना चाहिए और एक सार्वजनिक सेवा और लोक कल्याण के रूप में लिया जाना चाहिए।

समर्पण मांगें – सिविल सेवा,

समर्पित सिविल सेवक से निम्नलिखित मांगें–

1. सिविल सेवक को अपने सुविधा क्षेत्र से बाहर आना चाहिए और लोगों से जुड़ना चाहिए।

2. एक सिविल सेवक को व्यक्तिगत हितों के स्थान पर सार्वजनिक हित को प्राथमिकता देने की आवश्यकता है।

3. चूँकि सिविल सेवक के जीवन का उद्देश्य एक सार्वजनिक सेवा है, इसलिए उसके लिए यह आवश्यक है कि वह सभी को समानता की भावना से देखे।

4. समाज के शोषित वर्ग की समस्याओं के समाधान के लिए सिविल सेवक का पूर्ण सहयोग करना आवश्यक है।

5. एक ईमानदार, निष्पक्ष और सच्चा नागरिक सेवक बनने के लिए सेवाओं के प्रति समर्पित होना चाहिए।

Feeling of renunciation to achieve the objectives of civil service should be there . When a sense of sacrifice is created in a civil servant, then the fear of punishment and prize will end. Therefore, the Civil Services Reference of a Civil Servant should not be taken professionally and taken as a public service and people Welfare.

Dedication Demands - Civil Services,

Demands following from dedicated civil servant-

1. Civil servant should come out from their comfort zone and connect to the people.
2. A civil servant needs Prioritizing public interest in place of personal interests.
3. Since the aim of life of a civil servant is a public service, it is necessary for him to see everyone with the spirit of equality.
4. It is necessary for the civil servant to fully cooperate to resolve the problems of the exploited class of society.
5. To become an honest, fair and truthful civil servant one must be devoted to the services.

J - अध्यात्म राष्ट्रवाद की अवधारणा लिखें ।

महर्षि अरविन्दो राष्ट्रवादी विचारक थे और आपने अध्यात्मक राष्ट्रवाद के सिद्धांत का प्रतिपादन किया। आपका मानना था कि राष्ट्रवाद एक राजनैतिक क्रियाकलाप न होकर मनुष्य का एक धर्म हैं अर्थात् प्रत्येक मनुष्य के जो कर्तव्य है वे राष्ट्राप्रति समर्पित होने चाहिए और उनका पालन धर्म के रूप में किया जाना चाहिए। इस धर्म का प्रधान हथियार इन्होंने अध्यात्मक को माना है और पूरे राष्ट्रीय आन्दोलन को अध्याय आन्दोलन का रूप देकर राष्ट्रवाद की नई व्याख्या की।

महर्षि अरविन्दो ने वन्देमातरम् में लिखा है कि राष्ट्रवाद क्या हैं? राष्ट्रवाद केवल राजनैतिक कार्यक्रम नहीं है। राष्ट्रवाद तो एक धर्म है जो ईश्वर के पास से आया है, जिसके लिए आपको जीवित रहना है। हम सभी लोग ईश्वर के अंश है। अतः हमें धार्मिक दृष्टि से राष्ट्रवाद का

J- Write the concept of Spiritual Nationalism.

Bankim Chandra Chaterjee and Sri Aurobindo preached the theory of spiritual nationalism.

They considered India as a Goddess and asked his followers to worship his/her own motherland.

This theory believed that India is not just a piece of land. It is a living being with feelings and emotions controlled by God.

Sri Aurobindo successfully combined spiritual teachings as a way of patriotism and asked people to sacrifice their lives for their divine motherland India.

Both Spiritualism and Nationalism can and do coexist. There is no binding on a person who is a spiritualist, not to be nationalist.

Infact spiritualism would make one less self centred and more focussed toward causes of other, which will breed nationalism as a whole.

A spiritualist is even more wider in his approach as for him whole world and people are his own and he

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

मूल्यांकन करना चाहिए।

अतः अध्यात्म राष्ट्रवाद के प्रेरणा थे।

K - अंर्तराष्ट्रीय पारदर्शिता आयोग पर टिप्पणी करें

ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल एक गैर–सरकारी संगठन है जो अंतर्राष्ट्रीय विकास में कॉर्पोरेट और राजनीतिक भ्रष्टाचार की निगरानी और प्रचार करता है।

मूल रूप से मई 1993 में जर्मनी में एक गैर–लाभकारी संगठन के रूप में स्थापित, ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल अब एक अंतरराष्ट्रीय गैर–सरकारी संगठन है। यह एक वार्षिक भ्रष्टाचार धारणा सूचकांक, दुनिया भर में भ्रष्टाचार की तुलनात्मक सूची प्रकाशित करता है। यह मुख्यालय बर्लिन, जर्मनी में स्थित है।

ष्संगठन भ्रष्टाचार को परिभाषित करता है क्योंकि निजी लाभ के लिए सौंपी गई शक्ति का दुरुपयोग जो अंततः सभी को नुकसान पहुंचाता है जो अधिकार की स्थिति में लोगों की अखंडता पर निर्भर करता है।ष

यह उद्देश्य है

ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल वैश्विक नागरिक समाज संगठन है जो भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई का नेतृत्व कर रहा है। यह दुनिया भर में पुरुषों, महिलाओं और बच्चों पर भ्रष्टाचार के विनाशकारी प्रभाव को समाप्त करने के लिए एक शक्तिशाली विश्वव्यापी गठबंधन में लोगों को एक साथ लाता है। ज्प का मिशन भ्रष्टाचार मुक्त दुनिया की ओर बदलाव लाना है।

ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल की सबसे बड़ी सफलता भ्रष्टाचार के विषय को दुनिया के एजेंडे में रखना है। विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष जैसी अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएँ अब भ्रष्टाचार को विकास की मुख्य बाधाओं में से एक के रूप में देखती हैं, जबकि 1990 के दशक से पहले इस विषय पर व्यापक रूप से चर्चा नहीं हुई थी। ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल ने इसके बाद भ्रष्टाचार के खिलाफ संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन की शुरुआत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

L - राजनीति व नैतिकता साथ–साथ नहीं चल सकती। स्पष्ट करो।

राजनीति से आशय कुछ प्रमुख दल व नेताओं के

K- Comment on Transparency International .

Transparency International (TI) is a non-governmental organization (NGO) that monitors and publicizes corporate and political corruption in international development.

Originally founded in Germany in May 1993 as a not-for-profit organization, Transparency International is now an international non-governmental organization. It publishes an annual Corruption Perceptions Index, a comparative listing of corruption worldwide. It's headquarters is located in Berlin, Germany.

"The organization defines corruption as the abuse of entrusted power for private gain which eventually hurts everyone who depends on the integrity of people in a position of authority."

It's Objective

Transparency International is the global civil society organization leading the fight against corruption. It brings people together in a powerful worldwide coalition to end the devastating impact of corruption on men, women and children around the world. TI's mission is to create change towards a world free of corruption.

Transparency International's biggest success has been to put the topic of corruption on the world's agenda. International Institutions such as the World Bank and the International Monetary Fund now view corruption as one of the main obstacles for development, whereas prior to the 1990s this topic was not broadly discussed. Transparency International furthermore played a vital role in the introduction of the United Nations Convention against Corruption.

L- Politics and ethics can not go together.

Make clear .

Ethics simply means moral principles that govern a person's behaviour in an organization or society or

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

द्वारा सरकार की नीतियों का क्रियान्वयन करवाना, तो वहीं नैतिकता से आशय नैतिक मूल्यों के आधार पर कार्य करना। प्राचीन समय में विभिन्न राजा हुआ जैसे चन्द्रगुप्त मौर्य, अकबर, राजा विक्रमादित्या, अशोक, चाणक्य आदि शासकों ने अपने शासन, को

सुचारू रूप से संचालित करने के लिए एक विशेष तर्कपूर्ण नीतियों के साथ जहां जनता, समाज, सैनिकों के साथ राजनीति की।

इनमें कहीं न कहीं न कहीं नैतिक मूल्य, सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता, निष्पक्षता आदि मूल्यों का समावेशन था। तो वह वर्तमान में कुशल राजनीति को चलाने के लिए, किसी राजनेता में नैतिक मूल्यों का होना आवश्यक है।

अतः हम कह सकते है कि राजनीति व नैतिकता साथ–साथ चलती है जिससे समाज आगे की ओर अग्रसर हो रहा है।

while conducting an activity. Ethics dictate how man's social and political life must or ought to be organized in order to be moral.

No they cannot –

1. Ethical consideration during resolution of political crisis can compound the problem. Ethics can give infinite dimensions to the problem as each individual is unique and hence it becomes much more difficult to resolve the issues.
2. Sometimes some decisions are unpopular, tough, yet have to be taken for future benefit or larger good. Political problems require political solutions. Morality, ethical considerations will be a hindrance for sure in such unpopular decisions because compromises can largely cause settling for small thing when a big benefit was possible.
3. Kautilya justifies everything that is needed to take, keep and extend political power, without any moral hindrance.

Yes they can –

1. Mahatma Gandhi, whose teachings are imbibed in our politics, is a perfect example of how one can have ethics even in politics. Our constitution too expects ethics in governance and in turn politics.
2. Laws are measured against values such as justice, solidarity, equity, responsibility. By such comparison it is possible to challenge and change laws, bringing them in conformation with the ethics and values and the evolving society.
3. Although Kautilya, Machiavelli, etc. dispute the relevance of ethical norms in politics, they may still see justice and welfare as assets in terms of political continuity, stability and sustainability. Thus even unwillingly, ethics become part of the politics and so we can say that they both can go hand in hand.

Conclusion

In all traditions, ethical responsibility in politics is constantly addressed. We swing between two extremes - ethics as a frame of reference for politics and politics delinked from any ethical accountability. However we must realize that right from beginning no tradition accepts systematic cruelty or the justification of impunity.

M - अभिवृत्ति क्या है । इसके परिवर्तन के कारक लिखे ।

M- What is the attitude? Write the reason for its change.

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

मनोवृत्ति से आशय किसी मनुष्य की मानसिक स्थिति से हैं अर्थात वह किसी भी जाति, धर्म, समुदाय व लिंग के प्रति किस प्रकार सोच रखता है। मनोवृत्ति के तीन संघटक तत्व होते है–

1. संज्ञानात्मक
2. भावनात्मक
3. क्रियात्मक

मनोवृत्ति सकारात्मक व नकारात्मक होती है। मनोवृत्ति में परिवर्तन दो प्रकार से होता है–

1. समरूप परिवर्तन
2. विरूप परिवर्तन

मनोवृत्ति सामान्यतः स्थाई होती है लेकिन मनोवृत्ति को कुछ कारणों से परिवर्तित किया जा सकता है–

1. प्रतिक्रिया के माध्यम से
2. व्यक्तिगत के द्वारा।
3. अनुनयन के माध्यम से।
4. रूचि के माध्यम से।
5. विश्वास के द्वारा।
6. अभिप्रेरणा के माध्यम से।

अतः उपरोक्त कारणों से स्पष्ट है कि इन सभी साधनों से किसी व्यक्ति की वस्तु या अन्य व्यक्ति, समुदाय, जाति, धर्म के प्रति मनोवृत्ति को परिवर्तित किया जा सकता है।

Attitudes are views, beliefs, or evaluations of people about something (the attitude object). The attitude object can be a person, place, thing, ideology, or an event. Attitudes can be positive or negative.

Eg: I hate men with long hair.

In the above example, the person is having a negative attitude towards men who grow long hair.

Reasons for change in Attitude -

Attitudes are associated beliefs and behaviors towards some object.They are not stable, and because of the communication and behavior of other people, are subject to change by social influences, as well as by the individual's motivation to maintain cognitive consistency when cognitive dissonance occurs—when two attitudes or attitude and behavior conflict. Attitudes and attitude objects are functions of affective and cognitive components. It has been suggested that the inter-structural composition of an associative network can be altered by the activation of a single node. Thus, by activating an affective or emotion node, attitude change may be possible, though affective and cognitive components tend to be intertwined.

There are three bases for attitude change: compliance, identification, and internalization.

N - रविंद्र नाथ टैगोर का मानवतावादी दृष्टिकोण था, स्पष्ट करें।

गुरूदेव का सम्पूर्ण जीवन वेदान्त दर्शन और अस्तित्ववादी प्रभावित रहा है। गुरूदेव उपनिषदों के विश्व की भावना से अत्यधिक प्रभावित हुए और सम्पूर्ण जीवनजगत में सत्ता को स्वीकार किया, इसलिए गुरूदेव को मानव मात्र की एकता में अनंत विश्वास या उनका विश्वास है कि ईश्वर प्रत्येक प्राणी व मनुष्य में निवास करता है, और मनुष्य का परमलक्ष्य यह है कि प्रत्येक प्राणी में स्थित ईश्वरी तत्व की सेवा तथा विश्वास करें और यही मानव का परमलक्ष्य है।

गुरूदेव के चिंतन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि

N- Ravindra Nath Tagore have humanitarian approach. Elaborate it.

Tagore was one of the most distinghished personality of modern asia. He stood for humanism, universalism, and the oneness of man.His views on human life on this planet are squarely situated in his vision of an idealized world where all contradictions,conflicts,and differences are resloved and dissolve into a cosmic consciousness of unity upholding and undergirding the life of the world of beings.This humane outlook prompts the poet to confess:"I have arrived as a pilgrim on this great planet(mahatirtha)where the deity of humanity(Naradebata sometimes referred to as

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

मनुष्य को ही सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी मानते है, इनका मानना है कि अस्तित्ववाद मानव कल्याण के लिए सकारात्मक दर्शन है। गुरूदेव इस प्रकृति का सबसे पड़ा सत्य मनुष्य को मानते थे, इसलिए धर्मवाद, सम्प्रदायवाद, राष्ट्रवाद से भी बड़कर मानवतावाद का महत्व देते थे।

गुरूदेव का मानना थाा कि भारत की प्रगति के लिए मनुष्य को एक–दूसरे की सहायता करनी चाहिए, इसलिए आप सन्यासवादी परम्परा के घोर विरोधी थे, क्योंकि सन्यास समाज को तोड़ने का कार्य करता है इसलिए यह किसी भी प्रकार से समाज के लिए हितकारी नहीं हो सकता। अपने निबंध 'The poets school' में गुरूदेव में लिखा है कि–

''मानव इस संसार में इसलिए नहीं आया कि किसी प्राणी को अपना दास बनाये।''

O - अंबेडकर दलितों के उद्धारक थे स्पष्ट करें।

अम्बेडकर जी का मानना था कि कुएं, नदियां, पर्वत, मंदिर, तालाब आदि मनुष्य मात्र के लिए है और दलितों का भी उन पर उतना ही अधिकार हैं, जितना कि समाज के अन्य वर्गो का है। इसलिए आप कहते है, जब दलितों को इनके प्रयोग करने पर रोक लगायी जायें तो उन्हें जबरदस्ती इनका प्रयोग करना चाहिए। दलितों को सामाजिक

अधिकार प्राप्त हो इसलिए आपने सात्याग्रह का मार्ग अपनाया जैसे–

1. **पहला सत्याग्रह(1927)**:– दलितों को पानी पीने व पानी भरने पर लगी रोक करे विरोध किया। 1927 में आप अपने साथियों के साथ महद तालाब पहुंचे और संघर्ष के उपरांत आपने तालाब का जल पिया और दलितों को उनका अधिकार दिलाया।

2. **दूसरा सत्याग्रह(1930) में कालाराम मंदिर**– 1930 में कालाराम मंदिर में प्रवेश को लेकर किया गया, जिसमें समाज के अन्य वर्गो के द्वारा दलितों को मंदिर में प्रवेश करने से रोका गया था। अनेक संघर्ष के बाद 1939 में इस सत्याग्रह को बंद कर दिया गया।

अतः कहा जा सकता है कि किसी भी सामाजिक वस्तु पर दतिलों का भी उतना ही अधिकार होता है जितना कि अन्य वर्गो का जिसके लिए अम्बेडकर जी ने अथक प्रयास किये।

Paramatman(supersoul) or the innermost Overman) presides over the history of all places and races.I sit under his throne to perform the uphill task of shedding my egi and all sense of discrimination."For tagore ,a real and concrete human being is never the arbiter of his destiny.His life remains unfulfilled and imperfect until he is able to express the Universal Man in him in thought and action.However,this innermost being (Innermost overman) remains hidden,accessible only to a man of equipoise(samhita) who has undergone a rigorous regimen of ascetic moral exercise and contemplation.The goal of human life's journey cannot be found in the real world of real people with their sufferings, strivings, struggles, triumphs, and tragedies. It resides in the abstract world of spirit.

O- Ambedkar was the redeemer of Dalits.

Bhimrao Ramji Ambedkar popularly known as Babasaheb Ambedkar, was an Indian jurist, economist, politician and social reformer who inspired the Dalit Buddhist movement and campaigned against social discrimination towards the untouchables (Dalits), while also supporting the rights of women and labour.

As Babasahed was from an untouchable caste so he knew what it feels when people discriminate against you without any fault of yours. He did a great job in removing such social issues in India. Bahishkrit Hitakarini Sabha was the first organized attempt from his side to uplift the untouchables. He wanted to educate them for a better life. After this many public movements and marches had been initiated under his leadership that were meant to bring equality in the society.

He was elected as the first law minister of independent India and appointed as a Chairman of the Constitution Drafting Committee. His role was to write a new Constitution for India. By keeping in mind to bring equality in society he did great for untouchables. For this, freedom of religion was defined the Constitution. He created the system of reservation by keeping in mind untouchable and their condition in India. He worked for the improvement of the status of women in India.

Dr B. R. Ambedkar was truly a builder of a nation and a global leader instead of just a Dalit leader. He is the one who had given the principles of social justice.

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

केस स्टडी – 1

(अ) उच्च स्तर पर भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिए डॉ। वीरप्पा मोइली की अध्यक्षता में दूसरा एआरसी दो संस्थानों, केंद्रीय स्तर पर लोकपाल और राज्य स्तर पर लोकायुक्त स्थापित करने की सिफारिश करता है। भले ही हमारे पास अपनी न्यायिक प्रणाली सहित मुद्रास्फीति को रोकने के लिए पहले से ही कुछ तंत्र हैं, लेकिन निम्नलिखित कारणों से एआरसी ने इन दोनों संस्थानों की सिफारिश की है–

– निर्वाचित और प्रशासनिक अधिकारियों पर जांच के लिए मौजूदा उपकरण प्रभावी नहीं हुए हैं, क्योंकि भ्रष्टाचार के मामलों के बढ़ते मामलों का सुझाव है।

– केंद्रीय सतर्कता आयोग (ब्टब) को केवल प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा भ्रष्टाचार के आरोपों की जांच के लिए बनाया गया है।

– सीबीआई, देश की प्रमुख जांच एजेंसी, कार्मिक लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय (प्रधानमंत्री के तहत) की देखरेख में कार्य करती है और इसलिए जांच के दौरान राजनीतिक दबाव से प्रतिरक्षा नहीं होती है। वास्तव में, सीबीआई की स्वतंत्रता और व्यावसायिकता की कमी को सुप्रीम कोर्ट ने हाल के दिनों में अक्सर भुनाया है।

– इन सभी ने अपनी स्वयं की जांच टीम के साथ लोकपाल के निर्माण को जल्द से जल्द संभव बनाने की आवश्यकता जताई है। इसलिए, वहाँ की जरूरत है। एक ऐसा तंत्र जो लोगों की शिकायतों का निवारण करके न्याय प्रदान करने का बहुत ही सरल, स्वतंत्र, त्वरित और सस्ता साधन अपनाएगा।

– विभिन्न देशों के उदाहरण बताते हैं कि लोक सेवकों द्वारा भ्रष्टाचार और बेईमान प्रशासनिक फैसलों के खिलाफ लोकपाल की संस्था ने बहुत सफलतापूर्वक लड़ाई लड़ी है, और लोकतंत्र और नागरिक अधिकारों के वास्तविक संरक्षक के रूप में काम किया है।

(ब) क्या भारतीय प्रशासनिक प्रणाली में गैर–पारदर्शिता भ्रष्टाचार के लिए जिम्मेदार है?

भ्रष्टाचार भी सरकार की ओर से अपारदर्शी प्रक्रिया और कागजी कार्रवाई के परिणामस्वरूप होता है। पारदर्शिता की कमी भ्रष्टाचार के मांग और आपूर्तिकर्ताओं दोनों के

Case study - 1

(a) To curb corruption at higher level the 2nd ARC in the chairmanship of Dr. Veerappa Moily recommends to establish two institution, Lokpal at central level and Lokayukta at state level. Even though we already have some mechanisms to curb inflation including our judicial system due to the following reasons ARC has recommends these two institutions-

- The existing devices for checks on elected and administrative officials have not been effective, as the growing instances of corruption cases suggest.
- The Central Vigilance Commission (CVC) is designed to inquire into allegations of corruption by administrative officials only.
- The CBI, the premier investigating agency of the country, functions under the supervision of the Ministry of Personnel Public Grievances and Pensions (under the Prime Minister) and is therefore not immune from political pressures during investigation. Indeed, the lack of independence and professionalism of CBI has been castigated by the Supreme Court often in recent times.
- All these have necessitated the creation of Lokpal with its own investigating team in earliest possible occasion. Therefore, there is a need for. a mechanism that would adopt very simple, independent, speedy and cheaper means of delivering justice by redressing the grievances of the people.
- Examples from various countries suggest that the institution of ombudsman has very successfully fought against corruption and unscrupulous administrative decisions by public servants, and acted as a real guardian of democracy and civil rights.

(b) Is non-transparency in the Indian Administrative System responsible for corruption?

Corruption also results from opaque process and paperwork on the part of the government. Lack of transparency allows room for maneuver for both the

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

लिए पैंतरेबाजी की अनुमति देती है। जब भी उद्देश्य मानक और पारदर्शी प्रक्रियाएं गायब होती हैं, और व्यक्तिपरक राय और अपारदर्शी ६ छिपी हुई प्रक्रियाएं मौजूद होती हैं, तो स्थितियां भ्रष्टाचार को प्रोत्साहित करती हैं। आधि ाकारिक गुप्त अधिनियम और गोपनीय रिपोर्ट भी भ्रष्टाचार को बढ़ावा देती है।

हमारे देश में इस बात की अच्छी संभावना है कि बड़ी संख्या में अधिकारियों के पास संपत्ति और आय आय के कानूनी स्रोतों से अनुपातहीन है। लेकिन, भारत में लोक सेवकों और राजनेताओं की संपत्ति और आय को जानने के लिए कोई कठिन उपाय नहीं हैं, जो उनके मन में कोई भय की स्थिति पैदा करते हैं। इसके अलावा स्विस बैंक जैसे तंत्र, जो गैर–प्रकटीकरण की गारंटी देते हैं, भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रहे हैं क्योंकि अवैध धन छिपाना आसान है।

भ्रष्टाचार को लोगों के जीवन के तथ्य के रूप में स्वीकार करना और यह महसूस करना कि भ्रष्टाचार में शामिल लोग स्वतंत्र होंगे और सत्ता, स्थिति और धन प्राप्त करेंगे

आरटीआई के बावजूद ऐसी स्थिति पैदा हो गई है, लोग इसे गंभीरता से नहीं लेते हैं और इससे लोगों के मन में गैर–पारदर्शिता की स्थिति पैदा होती है।

कौटिल्य के अनुसार, किसी देश के नागरिकों को कानूनी व्यवस्था का भय होना चाहिए। लेकिन गैर–पारदर्शिता के कारण हमारे देश में भ्रष्ट लोगों को पकड़े जाने का कोई डर नहीं है। इसलिए गैर पारदर्शिता हमारे देश में बढ़ते भ्रष्टाचार का सबसे बड़ा कारण है।

demanders and suppliers of corruption. Whenever objective standards and transparent processes are missing, and subjective opinion and opaque/hidden processes are present, the conditions encourage corruption. Official secret act & confidential reports also promotes corruption.

In our country there is a good probability that a large number of officials have assets & income disproportionate to their legal sources of income. But, in India there are no hard measures to know the assets & incomes of public servants & politicians, which create a no fear condition in their mind. Also the mechanism like Swiss bank, which gives a guarantee of non-disclosure, are promoting corruption as the illegal money is easy to hide.

The people's acceptance of corruption as a fact of life & the feeling that those involved in corruption will go free & will acquire power, status and wealth have led to a situation where despite the RTI, people do not take it seriously and this creates a condition of non-transparency in the mind of the people.

According to Kautilya, citizens of a country should have fear of the legal system. But due to non-transparency the corrupt people in our country are having no or negligible fear of being caught. Hence non transparency is one of the biggest reasons of increasing corruption in our country.

(स) क्या लोकायुक्त राजनीतिक और प्रशासनिक स्तरों पर भ्रष्टाचार को नियंत्रित करने में सफल होगा?

लोकपाल और लोकायुक्त की नई संस्था के बारे में भारतीय मीडिया और भारतीय समाज में बहुत चर्चा है और इन दोनों को भ्रष्टाचार की समस्या का रामबाण माना जाता है जो हमारे देश में राक्षसी रूप से बढ़ रहा है। भले ही हमारे पास पहले से ही भ्रष्टाचार से लड़ने का एक तंत्र है, लोकपाल की शक्ति (केंद्र में) और लोकायुक्त (राज्य स्तर पर) उन्हें भ्रष्टाचार से निपटने के लिए भव्य स्तर पर भी प्रभावी बनाता है–

(c) Will Lokayukta be successful in controlling corruption in the political and administrative levels?

There is a lot of buzz in the Indian media and Indian society about the new institution of Lokpal and Lokayukta and these two are considered as the panacea to the problem of corruption which is rising monstrously in our country. Even though we already have a mechanism to fight corruption, following power of Lokpal (at centre) and Lokayukta (at state level) makes them effective to deal with the corruption even at grand level-

- The jurisdiction of the Lokayukta covers all the categories of the public servant. Judiciary excluded

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone
KAUTILYA ACADEMY INDORE

– लोकायुक्त के अधिकार क्षेत्र में लोक सेवक की सभी श्रेणियां शामिल हैं। न्यायपालिका ने पूरी तरह से बाहर रखा और विधायकों ने विधायिका में अपने वोटों और भाषणों के संबंध में बाहर रखा। मुख्यमंत्री को लोकायुक्त (सांसद लोकायुक्त अधिनियम के अनुसार) के दायरे में लाया गया है।

– अधिनियम लोकपाल को अधीक्षण का अधिकार प्रदान करता है और मामलों पर सीबीआई सहित किसी भी जांच एजेंसी को निर्देश देता है, जिसे लोकपाल से ही संदर्भित किया जाएगा। लोकपाल के अनुमोदन के लिए ब्ठप् के अधिकारियों के स्थानांतरण की आवश्यकता होगी, जो लोकपाल द्वारा संदर्भित मामलों की जांच कर रहे हैं

– अधिनियम इस मामले में अभियोजन पक्ष के लंबित होने पर भी भ्रष्ट साधनों द्वारा संपत्ति जस पंज को संलग्न करने और जब्त करने के प्रावधान देता है। प्रारंभिक जांच और परीक्षण के लिए स्पष्ट समयसीमा अधिनियम में रखी गई है।

हालांकि, इन मजबूत बिंदुओं के बावजूद इसकी प्रभावशीलता पर कुछ संदेह हैं, पहला और सबसे महत्वपूर्ण यह है कि लोकपाल और लोकायुक्त जांच के लिए मौजूदा संस्था पर निर्भर करता है जो भ्रष्टाचार मुक्त नहीं पाए जाते हैं और इसलिए जांच स्वयं राजनीतिक दबाव के जोखिम में है। दूसरा यह है कि हमें लोकपाल और लोकायुक्त को व्हिसल–ब्लोअर अधिनियम के साथ पूरक करने की आवश्यकता है, लोकपाल ६ लोकायुक्त के साथ व्हिसल–ब्लोअर का काम भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिए अनुकूल वातावरण बनाता है। मजबूत व्हिसल–ब्लोअर अधिनियम दुनिया भर में प्रदान किया गया है, लेकिन भारत में राजनीतिक वर्ग अभी भी भ्रष्टाचार को रोकने के लिए तैयार नहीं है क्योंकि यह उन्हें सबसे ज्यादा पसंद करता है।

completely and MLAs excluded in respect of their votes and speeches in legislature. The Chief Minister has been brought under the purview of the Lokayukta (according to MP Lokayukta act).

- The Act provides Lokpal the right to superintendence and directs any investigation agency including the CBI on the cases, which will be referred to them from the Lokpal itself. Lokpal's approval will be required for the transfers of the officers of the CBI, who are investigating the cases referred by the Lokpal
- The Act gives the provisions to attach and confiscate the property tl iat has been acquired by corrupt means even in the case that the prosecution of the case remains pending. Clear timelines for preliminary enquiry and trial has been laid in the Act.

However despite these strong points there are some doubts over its effectiveness, the first and foremost is that the Lokpal and Lokayukta depends on the existing institution for investigations which are found not to be corruption free and hence the investigation is itself at risk of political pressure. The second is that we need to supplement Lokpal and Lokayukta with the Whistle-Blower act, the working of Whistle-Blower with Lokpal/ Lokayukta creates favourable environment to curb corruption. Strong Whistle-blower act has been provide all over the world but in India the political class is still not willing to stop corruption as it favors them most.

केस स्टडी – 2

(क) भारत में इस तरह के घोटालों का मूल कारण क्या है?

ऐसे भव्य स्तर के घोटाले के मूल कारणों में से एक यह है कि लोकतंत्र में विधायिका में सर्वोच्च सत्ता रखने वाले नेताओं और सरकारी अधिकारियों के कारण जो व्यावहारिक रूप से काम करते हैं, भ्रष्ट अधिकारियों के मन में नगण्य

Case Study -2

(a) What is the fundamental reason for such kind of scams in India?

One of the fundamental reasons for such grand level scam is that due to the involved of politicians who have supreme power in legislature in a democracy and the Government officials which do things practically, there was negligible fear in the mind of corrupt officials .

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

भय था।

एक और समस्या प्रणाली में पारदर्शिता की कमी है जो पक्षपात बढ़ाती है और नियमों और प्रक्रियाओं के प्रवाह की ओर ले जाती है।

साथ ही हमारे राजनीतिक क्षेत्रों में नैतिक मूल्यों की कमी है, जो सामान्य लोगों पर उनके कृत्यों के परिणामों के बारे में परेशान नहीं करते हैं और केवल अपने वित्तीय लाभ के बारे में सोचते हैं।

इस तरह के व्यवहार के लिए हमारा समाज और मीडिया भी जिम्मेदार है क्योंकि एक समाज भ्रष्ट व्यक्ति की समाज के सदस्य के रूप में आलोचना नहीं करता है, इसके बजाय उनकी संपत्ति के कारण उनका सम्मान किया जाता है।

Another problem is the lack of transparency in the system which increases partiality and lead to the flouting of the rules and procedures.

Also the lack of moral values in our political spheres, which do not bother about the consequences of their acts on general people and think only about their financial profit.

Our society and media is also responsible for such behaviors as a society do not criticize corrupt person as a member of society, instead they are respected because of their wealth.

(ख) सरकार इस तरह के घोटालों को नियंत्रित करने में असमर्थ क्यों है?

इसकी मुख्य वजह खुद सरकार की भागीदारी है।

अन्य कारण हैं– बहुत से सक्रिय राजनीतिक दल राजनीतिक दलों की विचार प्रक्रिया में अल्पकालिक दृष्टि पैदा करते हैं, क्षेत्रीय स्तर के दलों की इतनी अधिक आलोचना नहीं की जाती है और क्योंकि वे एक या दो बार सत्ता में आते हैं, वहां का मुख्य ध्यान वित्तीय लाभ प्राप्त करने के लिए उस शक्ति का उपयोग करना है। संसाधनों। चूँकि मनी फैक्टर अभी भी हमारे भ्रष्ट मीडिया की बदौलत एक बड़ी भूमिका उ चुनावी समय निभाता है, यह वित्तीय संसाधनों को हासिल करने के लिए छोटे दलों को आगे ध बढ़ावा देता है क्योंकि वे आसानी से चुनावी फंड नहीं पा सकते क्योंकि बड़े राष्ट्रीय दल इसे पा सकते हैं।

भ्रष्टाचार को नियंत्रित करने के लिए इच्छाशक्ति के बावजूद सरकार की अक्षमता का सबसे महत्वपूर्ण कारण भारतीय जनता है। कारक निरक्षरता और जनता की इच्छा की कमी है जो सरकारी पहल को अप्रभावी बनाता है या कम से कम यह प्रभावी नहीं है।

(b) Why Government is unable to control such scams ?

The prime reason is the involvement of the government itself .

Other reasons are- too many active political parties creates short term vision in thinking process of political parties, regional level parties are not criticized that much and also because they come in power only once or twice there prime focus is too utilize that power to gain financial resources. Also since the money factor still plays a big role m election times thanks to our corrupt media, it further / promotes small parties to gain financial resources because they cannot easily find election funds as the big national parties can find it.

One of the most important reasons of government's ineffectiveness despite the will, to control corruption is the Indian public. The factors are illiteracy and lack of will of the public which makes government initiatives ineffective or at least not that effective.

(स) ऐसे मामलों में) व्हिसल–ब्लोअर की क्या भूमिका है?

(c) What is the role of 'Whistle-blower in such cases?

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

एक व्हिसल–ब्लोअर एक व्यक्ति है जो अपने कार्यस्थल में गलत काम के बारे में चिंता उठाता है। यह सार्वजनिक हित की रक्षा के लिए एक कर्मचारी द्वारा विशेषाधिकार प्राप्त जानकारी का अनधिकृत सार्वजनिक प्रकटीकरण है। सीटी उड़ाने को ष्नैतिक सूचनाष् के रूप में भी देखा जाता है, जो सार्वजनिक हित की रक्षा और बढ़ावा देने की इच्छा से प्रेरित है। ष्सार्वजनिक हित की रक्षा के लिए संगठनात्मक अधर्म का खुलासाष् सीटी बजाते हुए ष्बेहतरीन अभिव्यक्तिष् है। यह अनैतिक, अनुचित या अक्षम आचरण पर ध्यान आकर्षित करता है जो संगठन के ऐसे कार्यों से प्रभावित लोगों के लिए हानिकारक प्रभाव हो सकता है या हो सकता है।

A whistle-blower is a person who raises a concern about wrongdoing in his workplace. It is the unauthorized public disclosure of privileged information by an employee to protect the public interest. Whistle blowing is also viewed as a form of "ethical informing", which is motivated by the desire to protect and promote the public interest. The "disclosure of organisational wrongdoing to protect the public interest" is the "finest manifestation" of whistle blowing. It draws attention to unethical, inappropriate or Incompetent conduct which has or may have detrimental effects for those affected by such functions of organization.

As an exercise of responsible citizenship, whistle blowing against corruption can help create a new societal and organisational culture that emphasises integrity and honesty in the workplace. As a courageous act, whistle blowing against corruption can create inspiring stories that may, in the long run, reduce people's tolerance for questionable practices of doing business and public service.

(द) इतने बड़े नुकसान का भुगतान कौन करने वाला है?

यह आम लोगों को है कि इस तरह के नुकसान के लिए भुगतान कैसे किया जाता है। कारण सरल हैं। सबसे पहले, इस भ्रष्टाचार के कारण लाइसेंस प्राप्त करने वाली दूरसंचार कंपनी राजनेताओं और प्रशासकों को भारी रिश्वत देती है, और जैसा कि निजी संस्थान का पहला रूख लाभ कमाने के लिए है, ये कंपनियां अधिक टैरिफ ' दर वसूल करने जा रही हैं, तो उन्हें कवर करना पड़ सकता है। रिश्वत के भुगतान के कारण उन्हें हुई वित्तीय हानि तक।

दूसरा, चूंकि सरकार को भारी वित्तीय नुकसान हुआ है, इसलिए राजकोषीय लाभ को सीमित करने के लिए हवअबउउबवज को राजस्व लाभ के कुछ अन्य रूपों के लिए जाना पड़ता है

सीमा के भीतर घाटा। स्पष्ट विकल्प प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष करों में वृद्धि करना है। प्रत्यक्ष करों में वृद्धि से ईमानदार कर दाताओं को अनावश्यक रूप से नुकसान होता है अप्रत्यक्ष करों में वृद्धि का भुगतान अंतिम खरीदार द्वारा किया जाता है जो कि आम जनता है।

(d) Who is going to pay for such great loss?

It is the common people how pays for such losses. The reasons are simple. First, because of this corruption the telecom company who acquire licenses gives a heavy bribe to politicians and administrators, and as the first ruk of private institution is to make profit these companies are going to charge a higher tariff* rates then they might have to cover up the financial loss they have suffered due to the payment of bribes.

Second, as the government has suffered huge financial loss, the govcmmcot has to go for some other forms of revenue gains to limit it fiscal

deficit within limits. The obvious choice is to increase the direct and indirect Taxes. By increasing the direct taxes the honest tax payers suffers unnecessarily the increment in indirect taxes are paid by the ultimate buyer which is the general public.

Also these corruptions increases the black money in the system which makes RBI's monetary policies ineffective, hence it creates a risk to the economic stability of the country.

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone

साथ ही ये भ्रष्टाचार उस प्रणाली में काले धन को बढ़ाते हैं जो त्ठप् की मौद्रिक नीतियों को अप्रभावी बनाता है, इसलिए यह देश की आर्थिक स्थिरता के लिए जोखिम पैदा करता है।

(ङ) इस तरह के घोटाले को नियंत्रित करने में लोगों और मीडिया की क्या भूमिका होगी?

भारत में प्रणालीगत भ्रष्टाचार से निपटने के प्रयासों की जीविका और सफलता का सीधा संबंध इन प्रयासों में विशेष रूप से नागरिक समाज के लोगों की भागीदारी से है। भ्रष्टाचार से लड़ने में, सिविल सोसाइटी संगठनों को सरकारों, और उनकी एजेंसियों द्वारा किए गए सत्ता के दुरुपयोग, भ्रष्टाचार और अन्य अवैध और अनैतिक कार्यों की निगरानी, घ्च्उजागर करने और विरोध करने के द्वारा एक सक्रिय निगरानी की भूमिका निभाने की आवश्यकता होती है, वे भ्रष्टाचार से लड़ने के लिए नीतिगत विकल्पों और नए तरीकों का प्रस्ताव कर सकते हैं और सुधार कर सकते हैं सार्वजनिक प्रशासन और जवाबदेही। उनके अधिकारों के नागरिकों की जागरूकता बढ़ाने और भ्रष्ट आचरण का प्रतिरोध करने की उनकी इच्छा और क्षमता में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका है।

मीडिया (आमतौर पर जन माध्यम के रूप में जाना जाता है) जन संचार के चौनल हैं। इनमें शामिल हैंरू समाचार पत्र, पत्रिकाएं, किताबें, रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा, फोटोग्राफी और हाल ही में इंटरनेट (सोशल मीडिया)। मीडिया ने इसे एक अनूठी विशेषता से शक्ति और प्रभाव प्राप्त किया है जो बड़े दर्शकों के लिए संदेशों का एक साथ संचार है।

इस तरह के भ्रष्टाचारों पर अंकुश लगाने में मीडिया का मुख्य कार्य यह है कि–

– सूचना प्रसार में मदद करता है।
– आम जनता को शिक्षित करने की प्रक्रिया में मदद करना।
– समाज के प्रहरी के रूप में श्रृंखला।
– लोग क्या पढ़ते हैं, यह निर्धारित करके एजेंडा सेट करें।
– लोगों की सोच और दिमाग को प्रभावित करके जनमत को आकार देना।
– एजेंडा सेट करके और जनमत को आकार देकर सार्वजनिक नीति को प्रभावित करना।

(e) What will be the role of people and media in controlling such kind of scam?

The sustenance and success of efforts to combat systemic corruption in India is directly related to the extent of participation of the people especially through the civil society, in these efforts. In fighting corruption civil society organizations need to play a proactive watchdog role by monitoring, exposing and protesting abuse of power, corruption and other illegal and unethical acts committed by governments and their agencies, they can propose policy alternatives and new ways to fight corruption and improve public governance and accountability. They have a vital role to play in enhancing the awareness of the citizens of their rights and their willingness and ability to resist corrupt practices.

The civil society in India in the form of NGO is using the new IT such as social media in fighting against the corruption. For example- the INDIA AGAINST CORRUPTION movement in the leadership of Anna Hazare.

The Media (commonly referred to as mass media) are channels of mass communication. These include: newspapers, magazines, books, radio, television,cinema, photography and lately the internet (social media).The media derives it powers and influence from a unique feature that is simultaneous communication of messages to a large audience.

The main functions of media in curbing such corruptions are that it-

- Helps in information dissemination.
- Help in the process of educating the general public.
- Series as watchdog of the society.
- Set agenda by determining what people read.
- Shaping public opinion by influencing the thinking and mind-set of people.
- Influencing public policy by setting the agenda and shaping public opinion.

www.kautilyaacademy.com
www.facebook.com/KTSZone